DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
GOVT.V.Y.T. PG AUTONOMOUS COLLEGE .DURG CHHATTISGARH
अध्ययन सामग्री निर्माण
डा शकील हुसैन
shakeelvns27@gmail.com
विभागाध्यक्ष
राजनीति विज्ञान
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय ।
दुर्ग , छत्तीसगढ़ ।
नैक द्वारा **A+** मूल्यांकित

राज्य सावयवी है या व्यक्ति से पूर्व है । → State is prior to individual,

राज्य एक निर्मित नहीं अपितु विकसित संख्या है। यह प्राकृतिक है क्योंकि परिवार जैसे प्राकृतिक संगठन या विकसित रूप है। प्रत्येक प्राकृतिक वस्तु सावयव होती है और सावयव अपने अवयवी से पूर्व होता है। ऐतिहासिक दृष्टि से व्यक्ति पहले परिवार फिर ग्राम फिर राज्य के रूप मे संगठित होता है। लेकिन तार्किक दृष्टि से राज्य पहले आता है। क्योंकि व्यक्ति परिवार तथा ग्राम इनमें से कोई भी पूर्ण नहीं है। प्रत्येय अपूर्ण वस्तु अपने पुर्णत्व को प्राप्त करना चाहती है। वस्तुत: वस्तुका पूर्णत्व वस्तू से पूर्व होता है शरीर अपने हाथ पांव और अन्य अंगों से पूर्व होता है इस सम्बन्ध में अरस्तू Matter and form - 'पदार्थ तथा रूप ' तथा उद्देश्य वा कारण' 'End or cause' के सिद्धान्त के आधार पर अपने उस मत की पुष्टि करता है कि राज्य व्यक्ति से पूर्व है। जिस भ्रूण एक पदार्थ है तथा एक बच्चा उसका पूर्ण रूप एवं उद्देश्य है उसी प्रकार परिवार है गांव उसका रूप तथा उद्देश्य है, पुन: गांव पदार्थ है तथा राज्य उसका रूप एवं उद्देश्य है। इस विकास क्रम में जिस प्रकार मनुष्य बच्चे से पूर्व है और बच्चा भ्रूण से पूर्व है उसी प्रकार राज्य व्यक्ति से पूर्व है । अरस्तू के शब्दो मे
"नगर-राज्य स्वाभाविक रूप से व्यक्तियों से पूर्व है, क्योंकि व्यक्ति नगर-राज्य से पृथक अपनी प्राकृतिक आवश्यकताएं पूर्ण नहीं कर सकता हैं, क्योंकि वह आत्मनिर्भर नहीं हैं । "। आत्मनिर्भरता केवल नगर राज्य मे है ।

गृह कार्य

1-राज्य व्यक्ति से पूर्व है । इस कथन की 200 शब्दो मे व्याख्या करे ।
2- राज्य सावयवी है । इस कथन की 200 शब्दो मे व्याख्या करे ।

अरस्तू

संक्षिप्त परिचय

अरस्तू , का जन्म यूनान मे सिकंदर महान के दादा अमीनतास तृतीय के शासकीय चिकित्सक के घर 384 ईसा पूर्व मे स्टैगिरा नामक स्थान पर हुआ था तथा - मृत्यु 322 ईसा पूर्व , चाल्सिस नामक स्थान पर हुई । 367 ईसा पूर्व में वह एथेंस में प्लेटो की अकादमी में छात्र बने, 20 वर्षों तक वे वहां रहे। 348-347 ईसा पूर्व में प्लेटो की मृत्यु के बाद, वह मैसेडोनिया लौट आए, जहाँ वे युवा सिकंदर के शिक्षक बनाए गए। 335 ईसा पूर्व में उन्होंने एथेंस के लिसेयुम में स्वयं का विद्यालय स्थापित किया। इनके विचार ने दो सहस्राब्दियों तक पश्चिमी बौद्धिक प्रगति की दिशा निर्धारित की।
उनकी बौद्धिक सीमा अपरिमित थी, जिसमें अधिकांश विज्ञान और कई कलाएँ समाहित थीं। अरस्तू ने भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, प्राणीशास्त्र और वनस्पति विज्ञान में काम किया; मनोविज्ञान,

राजनीतिक सिद्धांत और नैतिकता , तर्क और तत्वमीमांसा , इतिहास और साहित्य , साहित्यिक सिद्धांत और अलंकार आदि विविध विषयो मे अद्भुत विद्वता के साथ कार्य किया । उन्होंने औपचारिक तर्क शास्त्र के अध्ययन का आविष्कार किया, इसके लिए एक पूर्ण प्रणाली तैयार की, जिसे सिलेगिस्टिक के रूप में जाना जाता है । प्राणीशास्त्र में उनका कार्य इतना प्रखर है कि, थ्योरी और प्रैक्टिकल दोनों मे 19वीं शताब्दी तक , उससे बाहर नही जाया जा सका था । उनका नैतिक और राजनीतिक सिद्धांत, विशेष रूप से नैतिक गुणों और मानव उत्कर्ष ("हैप्पिनेस") की उनकी अवधारणा, दार्शनिक गवेषणा को प्रभावित करती है और दिशा प्रदान करती है। उन्होंने प्रचुर मात्रा में लिखा; उनके प्रमुख उपलब्ध कार्यों में ऑर्गेनॉन , डी एनिमा **("**ऑन द सोल**"),** फिजिक्स , मेटाफिजिक्स, निकोमैचियन एथिक्स , यूडेमियन एथिक्स , मैग्ना मोरालिया , पॉलिटिक्स , रेटोरिक और पोएटिक्स शामिल हैं, साथ ही नैचुरल हिस्ट्री और साइंस पर अन्य कार्य भी शामिल है ।
https://www.britannica.com/biography/Aristotle